नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पीओके : भारत को रहना होगा सतर्क

पाक अधिकृत कश्मीर में तेजी से बिगड़ते हालात केवल पाकिस्तान का आंतरिक संकट नहीं हैं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा से भी सीधे जुड़े हुए हैं. रावलाकोट, मुज़फ़्फ़राबाद और कोटली जैसे क्षेत्रों में नागरिक प्रदर्शनों पर सुरक्षा बलों की कार्रवाई, प्रदर्शनकारियों के हताहत होने के दावे और व्यापक असंतोष इस बात का संकेत हैं कि पीओके में राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता गहराती जा रही है. ऐसे समय में भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह स्थिति पर लगातार पैनी नजर बनाए रखे और सीमा पर किसी भी संभावित चुनौती के लिए पूरी तरह तैयार रहे.

दरअसल, 'जम्मू-कश्मीर जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी' के नेतृत्व में निकाले गए लांग मार्च पर सुरक्षा बलों ने बल प्रयोग किया. प्रदर्शनकारी बिजली की बढ़ी हुई दरों, खाद्य सब्सिडी समाप्त किए जाने, महंगाई, प्रशासनिक दमन और नागरिक अधिकारों के हनन के विरोध में सड़क पर उतरे थे. विभिन्न स्रोतों ने कई लोगों के मारे जाने और बड़ी संख्या में घायल होने के दावे किए हैं. जाहिर है पाकिस्तान सेना से पीओके में जनता का असंतोष अब दबाए नहीं दब रहा है.

भारत सरकार ने इन घटनाओं और वहां कराए जा रहे तथाकथित विधानसभा चुनावों पर स्पष्ट और कड़ा रुख अपनाया है. विदेश मंत्रालय ने कहा है कि पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर में आयोजित किए जा रहे ये तथाकथित चुनाव केवल एक दिखावटी प्रक्रिया हैं. भारत ने यह भी कहा कि पाकिस्तान अपने अवैध कब्जे और गंभीर मानवाधिकार उल्लंघनों को छिपाने का प्रयास कर रहा है तथा वहां के जन-प्रदर्शन आर्थिक शोषण और नागरिक अधिकारों के हनन का परिणाम हैं. भारत ने पाकिस्तान सरकार द्वारा प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग और दमनात्मक कार्रवाइयों पर भी गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि वहां के लोगों के लोकतांत्रिक और मानवाधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए. यह प्रतिक्रिया भारत की उस स्थायी नीति के अनुरूप है, जिसके अनुसार पूरा जम्मू-कश्मीर, जिसमें पीओके भी शामिल है, भारत का अभिन्न अंग है.

इन घटनाओं का एक महत्वपूर्ण सुरक्षा पक्ष भी है. इतिहास बताता है कि पाकिस्तान में जब भी आंतरिक संकट गहराता है, तब कई बार नियंत्रण रेखा पर तनाव बढ़ाने या भारत विरोधी गतिविधियों को हवा देने की कोशिशें देखी गई हैं. ऐसे में भारतीय सुरक्षा एजेंसियों और सेना को किसी भी संभावित घुसपैठ, आतंकवादी गतिविधि या सीमा पार उकसावे की आशंका को हल्के में नहीं लेना चाहिए. सीमा पर सतर्कता, खुफिया तंत्र की सक्रियता और कूटनीतिक स्तर पर निरंतर दबाव. तीनों की समान रूप से आवश्यकता है. पीओके में इंटरनेट सेवाओं पर प्रतिबंध, बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती और आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं पर आतंक-रोधी कानूनों के तहत कार्रवाई की खबरें भी चिंता बढ़ाती हैं. किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता की आवाज को बल प्रयोग से लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता. यदि वहां के लोगों की वास्तविक समस्याओं का समाधान नहीं किया गया, तो अस्थिरता और गहरा सकती है.

भारत को भावनाओं के बजाय दूरदर्शिता के साथ आगे बढ़ना होगा. एक ओर उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मानवाधिकारों के प्रश्न को मजबूती से उठाना चाहिए, वहीं दूसरी ओर अपनी सीमाओं की सुरक्षा और आंतरिक तैयारियों में कोई ढिलाई नहीं बरतनी चाहिए. पीओके की मौजूदा अशांति पाकिस्तान के लिए चेतावनी है, लेकिन भारत के लिए भी यह याद दिलाने वाली स्थिति है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर सतर्कता ही सबसे बड़ी शक्ति होती है.

क्या ढलान पर हैं क्षेत्रीय दल?

श्याम यादव

> भारतीय लोकतंत्र की शक्ति उसकी विविधता में है. राष्ट्रीय दल देश को व्यापक दृष्टि देते हैं, जबकि क्षेत्रीय दल स्थानीय आकांक्षाओं को स्वर देते हैं. दोनों की अपनी-अपनी भूमिका है. इसलिए आज यह कहना उचित नहीं होगा कि क्षेत्रीय दलों का दौर समाप्त हो गया है. सच यह है कि वे परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं. जो दल समय के साथ स्वयं को बदल पाएंगे, वे भविष्य की राजनीति में भी प्रभावी रहेंगे और जो बदलाव को नहीं समझ पाएंगे, वे धीरे-धीरे हाशिए पर चले जाएंगे.

भारतीय राजनीति का एक दौर ऐसा भी था जब दिल्ली की सत्ता का रास्ता राज्यों से होकर गुजरता था. केंद्र में सरकार बनाने के लिए राष्ट्रीय दलों को क्षेत्रीय दलों के समर्थन की आवश्यकता होती थी और कई बार कुछ सांसदों वाली पार्टियां भी राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय कर देती थीं. लेकिन पिछले एक दशक में राजनीतिक समीकरण तेजी से बदले हैं. राष्ट्रीय दलों, विशेषकर भाजपा के विस्तार और कांग्रेस के कमजोर होने के बीच यह सवाल महत्वपूर्ण हो गया है कि क्या भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव घट रहा है या वे केवल बदलते दौर में अपनी भूमिका तलाश रहे हैं?'

क्षेत्रीय दलों का उदय भारतीय लोकतंत्र की विविधता का परिणाम था. भारत की भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं ने ऐसे राजनीतिक दलों को जन्म दिया, जिन्होंने राज्यों की आकांक्षाओं को आवाज दी. तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति, आंध्र प्रदेश में क्षेत्रीय अस्मिता, पंजाब की स्थानीय राजनीतिक पहचान, महाराष्ट्र की क्षेत्रीय राजनीति और उत्तर प्रदेश-बिहार में सामाजिक न्याय के आंदोलनों ने क्षेत्रीय दलों को मजबूत आधार दिया. इन दलों ने केवल राज्यों की राजनीति को प्रभावित नहीं किया, बल्कि कई बार केंद्र की सत्ता का संतुलन भी तय किया.

1989 से 2014 तक का दौर गठबंधन राजनीति के प्रभाव का समय था. इस अवधि में केंद्र की अधिकांश सरकारों को क्षेत्रीय दलों के सहयोग की आवश्यकता पड़ी. कभी उनके समर्थन से सरकारें बनीं तो कभी समर्थन वापस लेने से राजनीतिक संकट भी पैदा हुए. उस समय क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय राजनीति के निर्णायक साझेदार हुआ करते थे. लेकिन 2014 के बाद तस्वीर बदलने लगी. भाजपा ने अनेक राज्यों में अपना संगठन मजबूत किया और उन क्षेत्रों में भी विस्तार किया, जहां लंबे समय से क्षेत्रीय दलों का प्रभाव था.

दूसरी ओर कांग्रेस के कमजोर होने से राष्ट्रीय राजनीति में नया संतुलन बना. कई राज्यों में अब मुकाबला राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय दलों के बीच दिखाई देने लगा है.

इस बदलाव का असर कुछ क्षेत्रीय दलों पर साफ दिखाई देता है. बिहार में जनता दल (यू) को बदलते राजनीतिक समीकरणों के बीच अपनी भूमिका तय करनी पड़ी है. महाराष्ट्र में शिवसेना विभाजन के बाद अपनी पुरानी राजनीतिक ताकत को बनाए रखने की चुनौती से गुजर रही है.

दिल्ली और पंजाब में प्रभाव स्थापित करने वाली आम आदमी पार्टी के सामने भी संगठन और विस्तार की चुनौतियां हैं. हालांकि पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, तमिलनाडु में द्रविड़ दल और कई अन्य राज्यों में क्षेत्रीय दल आज भी मजबूत हैं. इसलिए यह मान लेना जल्दबाजी होगी कि क्षेत्रीय राजनीति समाप्त हो रही है.

दरअसल, चुनौती केवल चुनावी हार-जीत की नहीं है. कई क्षेत्रीय दल अपने संस्थापक नेताओं के बाद नेतृत्व परिवर्तन की परीक्षा से गुजर रहे हैं. कुछ दल परिवार-केंद्रित राजनीति से बाहर नहीं निकल पाए हैं, तो कुछ नई पीढ़ी के मतदाताओं से प्रभावी संवाद स्थापित करने में पीछे रहे हैं. इसके विपरीत राष्ट्रीय दलों ने संगठन, तकनीक, संसाधनों और चुनावी प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी क्षमता बढ़ाई है. फिर भी भारतीय संघीय व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों की भूमिका समाप्त नहीं हो सकती.

राज्यों की अपनी समस्याएं, अपनी प्राथमिकताएं और अपनी सांस्कृतिक पहचान है. स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श तक पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय नेतृत्व की आवश्यकता बनी रहेगी. यही कारण है कि कई राज्यों में आज भी क्षेत्रीय दल सत्ता में हैं और राष्ट्रीय दलों को चुनौती दे रहे हैं.

वास्तविक प्रश्न यह नहीं है कि क्षेत्रीय दल खत्म हो रहे हैं या नहीं, बल्कि यह है कि वे बदलते भारत के अनुरूप खुद को कितना बदल पा रहे हैं. यदि वे केवल पुराने सामाजिक समीकरणों, परिवार-केंद्रित नेतृत्व और सीमित क्षेत्रीय प्रभाव तक सीमित रहेंगे तो उनकी ताकत कम हो सकती है. लेकिन यदि वे सुशासन, नए नेतृत्व, मजबूत संगठन और व्यापक जनविश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे तो भारतीय राजनीति में उनकी भूमिका बनी रहेगी.

मध्य क्षेत्र की डायरी

किसानों की हुंकार से गूंजा भोपाल

दिलीप झा

हजारों किसानों ने हक और सम्मान की लड़ाई लेकर 28 जुलाई की रात और 29 को दिनभर राजधानी भोपाल में जबरदस्त हंगामा किया. इस दौरान किसानों ने उनके हक में ठोस फैसले करने के लिए सरकार को बाध्य कर दिया. दरअसल में किसान संगठन के नेताओं को मुख्यमंत्री मोहन यादव से मिलने की तीन अलग-अलग तारीखें दी गई थीं, लेकिन इसके बावजूद किसी कारणवश मुख्यमंत्री तक उन्हें पंहुचने ही नहीं दिया गया. किसानों को जब यह अहसास हो गया कि सरकार उनकी बात सुनने को तैयार नहीं है तब उन्होंने अपनी ताकत से सरकार को परिचित कराया. सूत्र बताते हैं कि इसकी रूपरेखा हालांकि हरदा से तैयार हुई थीक्योंकि हरदा से नर्मदापुरम और फिर भोपाल तक किसानों की रैली आगे कैसे बढ़ी. दोनों जिले में किसानों को रोका नहीं गया. भोपाल में सरकारी बसों के उपर चढ़कर किसानों ने जबरदस्त हुड़दंग मचाया. पूरा शहर अस्त-व्यस्त हो गया. कई सड़कों पर भयंकर जाम की स्थिति बन गई. हालांकि भोपाल में पुलिस प्रशासन ने मोर्चा संभाला और मुख्यमंत्री निवास का घेराव करने जा रहे किसानों को रोका गया.

बताया जा रहा है कि इस रैली को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस दोनों दलों के नेताओं का समर्थन प्राप्त था. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय कैबिनेट पीएम आशा की गाइडलाइन तय करती हैं . क्या पीएम आशा की गाइडलाइन को न मानकर लगातार कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को राज्य सरकार पत्र लिखकर केंद्रीय कैबिनेट द्वारा तैयार पीएम आशा के नियमों का अनदेखा कर मोहन यादव सरकार केंद्र सरकार का विरोध कर रही है ? राज्य के कृषि मंत्री अपने पत्र में लिख रहे हैं कि केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जो लक्ष्य दिया है उसको बढ़ाया जाए. सच्चाई यह है कि केंद्र कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं करता है , कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान कोई लक्ष्य नहीं देते हैं बल्कि पीएम आशा के दिशा-निर्देशों के अनुरूप मूंग की 25% तक खरीद की स्वीकृति प्रदान कराये हैं. अपनी मांगों और अधिकारों को लेकर नर्मदापुरम से शुरू हुई 'किसान क्रांति पैदल यात्रा' मंगलवार को भोपाल पहुंची. हजारों अन्नदाताओं की मौजूदगी ने इस यात्रा को प्रदेश के किसान आंदोलन का बड़ा स्वरूप दे दिया. सबसे बड़ी बात इस आंदोलन की यह थी कि किसान सात दिनों का खाना-पानी लेकर यहां पहुंचे थे. हालांकि किसानों ने साफ संदेश दिया कि वे किसी टकराव के लिए नहीं, बल्कि अपनी मेहनत, फसल और भविष्य के सम्मान की लड़ाई लड़ने आए हैं. संयुक्त किसान मोर्चा के नेतृत्व में निकली इस यात्रा में शामिल किसानों ने मूंग की 100 प्रतिशत सरकारी खरीदी, ई-टोकन विकास प्रणाली को निरस्त करने, खाद की सुचारु उपलब्धता और किसानों की समस्याओं के स्थायी समाधान की मांग उठाई. नर्मदापुरम से शुरू हुई यह यात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ी, वैसे-वैसे इसमें किसानों की संख्या और संगठनों का समर्थन बढ़ता गया. बताया जा रहा है कि इस आंदोलन में 19 संगठन शामिल थे। मंडीदीप स्थित कलियासोत नदी के पुल पर पुलिस बैरिकेडिंग तोड़ते हुए बड़ी संख्या में किसान राजधानी की ओर आगे बढ़े और मुख्यमंत्री आवास की ओर कूच किया.किसानों के प्रतिनिधिमंडल ने 28 जुलाई की शाम कृषि मंत्री एदल सिंह कंषाना से मुलाकात कर अपनी समस्याएं रखीं. प्रतिनिधिमंडल में शामिल किसानों को कृषि मंत्री ने मुख्यमंत्री से चर्चा कर जवाब देने की बात कही, लेकिन मुख्यमंत्री से मुलाकात का समय उस समय भी तय नहीं हो पाया. राष्ट्रीय मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष राकेश गौर ने बताया कि किसानों का 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल सरकार तक अपनी बात पहुंचाने के लिए गया था.

किसान को पूरा सम्मान चाहिए

आंदोलन में शामिल किसानों का कहना था कि उनकी लड़ाई सिर्फ समर्थन मूल्य या खरीदी तक सीमित नहीं है, बल्कि खेती को लाभकारी बनाने और किसान परिवारों के भविष्य को सुरक्षित करने की मांग है .किसानों का आरोप है कि मूंग की पूरी सरकारी खरीदी नहीं होने के कारण कई किसानों को मजबूरी में अपनी उपज कम कीमत पर बेचनी पड़ती है .वहीं, खाद वितरण व्यवस्था में आ रही परेशानियों को लेकर भी किसानों में नाराजगी है .किसानों का कहना है कि समय पर खाद उपलब्ध नहीं होने से खेती प्रभावित होती है और उत्पादन लागत लगातार बढ़ती जा रही है .

कांग्रेस व लेफ्ट ने ठुकराई ममता की अपील

बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को सत्ता खो देने के बाद इस हकीकत का एहसास हुआ है कि विपक्ष की ताकत को कम नहीं आंकना चाहिए. वामपंथी या लेफ्ट पार्टियों के 27 वर्षों तक चले वर्चस्व को ध्वस्त कर ममता बनर्जी ने बंगाल की सत्ता संभाली थी. अपने 15 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने लेफ्ट और कांग्रेस को पूरी तरह प्रभावहीन माना. उन्हें लगा कि बंगाल में उनका एकछत्र राज है और बीजेपी सिर्फ उत्तर भारत के हिंदी भाषी प्रदेशों तक सीमित है. इस गलतफहमी के चलते ममता ने कभी भी कांग्रेस व लेफ्ट पार्टियों का सहयोग नहीं लिया. इस दौरान बीजेपी बंगाल में अपनी ताकत बढ़ाती चली गई. मोदी शाह के लगातार दौरे करने से बीजेपी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा. टीएमसी का विभाजन तथा सुबेंदु अधिकारी का बीजेपी में चले जाना ऐसे घटनाक्रम रहे, जिससे ममता के पैरों तले की जमीन खिसकती चली गई. अब सत्ता हाथ से निकल जाने के बाद ममता को होश आया कि वह बिल्कुल अकेली पड़ गई हैं. उनके अधिकांश सांसद भी साथ छोड़ चुके हैं. हाल ही में शहीद दिवस के मंच से ममता ने कांग्रेस, वामपंथी और अति वामपंथी ताकतों को एक मंच पर आने की अपील की. उन्होंने विपक्षी पार्टियों से बीजेपी के खिलाफ संयुक्त मंच या जॉइंट प्लेटफार्म बनाने का संदेश दिया. इस लड़ाई में सारे विपक्ष को मतभेद भुलाकर एकजुट होने की उनकी अपील को कांग्रेस और वाम दलों ने ठुकरा दिया. इन पार्टियों ने ममता बनर्जी को याद दिलाया कि किस तरह उन्होंने सत्तारूढ़ रहने के दौरान कांग्रेस व लेफ्ट के साथ शत्रु की तरह बर्ताव किया था और अपना प्रमुख राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी माना था. टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने लेफ्ट के नेता-कार्यकर्ताओं पर हिंसक हमले किए थे. अपने भाषणों में भी ममता ने लेफ्ट व कांग्रेस की हमेशा तीखी आलोचना की थी. इन सारी बातों को ये दोनों चाहकर भी भुला नहीं सकते. ममता के विपक्षी एकजुटता के आवाहन को उनकी राजनीतिक विवशता माना जा रहा है.

निशानेबाज

कुछ बातें सीधे करती हैं हिट राहुल ने किसे कहा इडियट

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, कुछ बातें कैरम के रिबाउंड के समान होती हैं जो सीधे तरीके से नहीं, बल्कि घुमा-फिराकर कही जाती हैं लेकिन सामने वाले के दिल पर जबरदस्त चोट करती हैं. लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भी यही कुशलता दिखाई. उन्होंने एक छात्रा से हुई अपनी बातचीत का उल्लेख करते हुए सदन में स्टुडेंट, इडियट व अंधभक्त जैसे शब्दों को परिभाषित किया. राहुल के मुताबिक एक छात्रा ने उन्हें बताया कि कुछ लोग खुद को भगवान मानते हैं. उन्हें लगता है कि सारा ज्ञान उनके अंदर से ही आता है. वे घमंडी होते हैं और किसी की बात नहीं सुनते. वे दूसरों की सच्चाई का आदर नहीं करते. दुनिया ऐसे लोगों को इडियट कहती है.'

पड़ोसी ने कहा, 'राहुल की ऐसी बातें बीजेपी व एनडीए के लोगों को बुरी तरह तिलमिला देती हैं. भक्तजन मन मसोसकर रह जाते हैं. वे आपस में कहते हैं कि पप्पू बहुत ज्यादा बोलने लगा. प्रत्यक्ष की बजाय परोक्ष रूप से हमारे आत्ममुग्ध नेता को इडियट कहने की गुस्ताखी की.'

हमने कहा, 'संसद में इसी तरह का माहौल चलता है. एक बार डॉ. राममनोहर लोहिया ने पं. नेहरू की अचकन या शेरवानी पर फब्ती कसते हुए उसे शाहजहां के तबलची की पोशाक बताया था. जहां तक इडियट शब्द की बात है, आपने वह गीत सुना होगा- अंगरेजी में कहते हैं कि आई लव यू ! इस गीत में परवीन बॉबी अमिताभ बच्चन के लिए गाती है- हम तुमको समझा अक्कलवाला, तुम निकला पूरा इडियट !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हर नेता के लिए जरूरी नहीं कि वह पढ़ा-लिखा, ज्ञानी या विद्वान हो. पार्टी के एक नेता ने कुछ दिनों पूर्व कहा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा. वास्तव में नेता को जानकारी नहीं थी कि यह कथन नेताजी सुभाषचंद्र बोस का था. पहले राजनीति में वकील, बैरिस्टर रहा करते थे, अब अधकचरा लोगों की भरमार हो गई है जिनकी पढ़ाई-लिखाई संदेह के घेरे में है. ये लोग कुएं के मेंढक हैं जो कुएं को ही सारी दुनिया समझते हैं.'

हमने कहा, 'इडियट का इतिहास पुराना है. एक राजकुमारी बहुत विदुषी थी जिसने शास्त्रार्थ में बड़े-बड़े विद्वानों को हरा दिया था. ये विद्वान पंडित राजकुमारी को सबक सिखाना चाहते थे. उन्होंने देखा कि एक युवक वृक्ष की उसी शाखा को काट रहा है जिस पर वह बैठा है. उसे इडियट या महामूर्ख मानकर वह राजकुमारी के पास ले गए व कहा कि यह मौन रहकर सांकेतिक भाषा में शास्त्रार्थ करता है. पंडितों ने चालाकी से युवक को शास्त्रार्थ में जिता दिया. बाद में मूर्खता का भंडाफोड़ हुआ. आगे चलकर वही युवक महाकवि कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12336 - डॉ. सागर खादीवाला

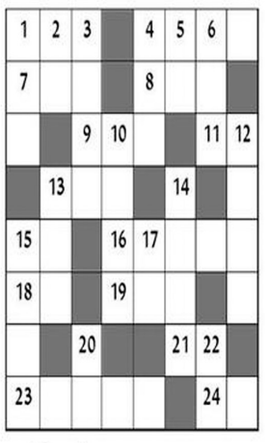

बाएं से दाएं
1. मटर का एक भेद, बांस, यथार्थ (सं.) 4. टीसना, चिलक मारना, चमकना 7. नीचे के सात लोकों में से सबसे नीचे का लोक, नागलोक 8. आशंका, भय, जोखिम 9. उछलना, फांदना 11. ईश्वर, परमेश्वर 13. चंचल, स्थिर न रहने वाला 15. कोई शब्द या बात बार-बार बोलने का काम 16. गणित में भिन्न का एक भेद जिसमें हर दश या उसका कोई घात होता है 18. उत्पन्न या पैदा की हुई, दासी, स्त्री 19. हिलोर, तरंग 21. तृतीय, तीसरा 23. एक प्रकार का मीठा कंद 24. अंतर, फासला

ऊपर से नीचे
1. समतल, जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो 2. तिक्त, तीखे-चरपरे स्वाद का 3. ट्यूब-वेल 4. मद्यपान के साथ खाई जाने वाली चटपटी वस्तु, चाट 5. बुरी आदत 6. संतोष, सुख-चैन, वादा 10. कीचड़ भरी वह जमीन जिस पर चलने से पैर धंस जाता हो 12. बनने या बनाने का भाव या ढंग, कृत्रिमता 13. अवलेह, चाटने की चीज 14. एक प्रकार की मिठाई जो जलेबी की तरह होती है 15. चंद्रमा (सं.) 17. बढ़ावा देने की क्रिया, शतरंज में कोई मुहरा ऐसी जगह रखना जहां से बादशाह उसको घात में पड़ता हो 20. चोरी करने वाला 22. टोना, टोटका, मोहिनी शक्ति इंद्रजाल

Solution 12335

श	क	टा	र		स	या	स
य	क्ष		क्ष	ति		मा	मा
न		ग	ण	क			यो
	पा	णि		ड़		अ	ज
झु	म	का		म	ज	मू	न
न	र		शो		रा	म	
झु		सो	र	ठा		न	री
ना	च	ना		ठ	सं		ढ़

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. भाईयों का सहयोग व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में राजनीति में अत्याधिक परिश्रम के कारण कष्ट होगा. मित्र के साथ व्यर्थ वाद विवाद के कारण मन व्यथित रहेगा. वर्ष के अन्त में शासन सत्ता से लाभ होगा. स्वजनों से सहयोग व अनुबंध होंगे.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंका नवीन योजनाओं में पूंजी निवेश होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियोंको स्वजनों से सहयोग नवीन अनुबंध होंगे. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम करना पड़ेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मित्र के साथ व्यर्थ वाद विवाद से मन व्यथित रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, कोमल तथा आकर्षक व्यक्तित्ववान होगा, इनके कार्य एक से अधिक होते हैं, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, यात्राप्रिय एवं लेखनादि में अधिक रूचि रखने वाला होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

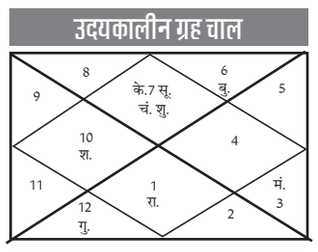

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवासरे रात 9/27, शतभिषा नक्षत्रे रात 8/20, शोभन योगे रात 11/48, वणिज करणे सू.उ. 5/24, सू.अ. 6/36, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण तृतीया को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, तिलहन, तेल, अलसी, सरसों में अच्छी मंदी होगी, रूई, चांदी के भाव में तेजी का योग है. आज 10 बजकर 30 मिनिट से 15 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 1925 है.

मेष- सहयोगी आपके व्यवहार से अपमाति महसूस कर सकते है, धार्मिक कार्यों में मानसिक संतोष बना रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफ्लता मिलेगी, उत्साह एवं लगन रहेगी.

वृषभ- मनमौजी रवैया नुकसानदायी हो सकता है, परिचितों से नुकसान हो सकता है, शारीरिक अस्वस्थ्यता एवं मानसिक पीड़ा हो सकती है. सुख साधनों में वृद्धि होगी.

मिथुन- कार्यक्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, सुविधा के अभाव से परेशानी होगी, पारिवारिक क्लेश एवं विवाद से दूर रहें. अनावश्यक तनाव से बचें.

कर्क-भौतिक सुख सुविधा पर बड़े खर्च की संभावना है, अपनी ताकत व पहुंच का सही लाभ लेने में नाकाम रहेंगे, न्यायालयीन प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

सिंह- विपरीत हालात में समझौता करना लाभकारी हैं, लेखन अध्ययन, एवं नवीन कार्यों की योजनाओं पर विचार होगा, जवाबदारी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- व्यर्थ की कार्यों में समय बीतेगा, पुराने विवाद के समाधान के आसार हैं, भूमि वाहनादि के कार्यों में सावधानी रखें, परीक्षा प्रतियोगिता के परिणाम उत्तम रहेंगें.

तुला- लेन देन के मामले आपका पक्ष मजबूत होगा, कर्जदारी से छुटकारा मिल सकता है, इच्छानुसार सफ्लता प्राप्त होने का योग है. विवादास्पद कार्य सफ्ल होंगे.

वृश्चिक- जोखिम के कार्यों में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक मामलों में अपनों की मदद से लाभ होगा, मित्रों का सामान्य सुख मिलेगा, अधूरे कार्यों के पूर्ण होने का योग है.

धनु- अनुशासन की कमी से काम का बोझ बढ़ेगा, केरिअर में अच्छी प्रस्ताव मिलेंगे, शारीरिक श्रम एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी, अतिथि वृषभमन हो सकता है.

मकर- कार्य विस्तार की संभावना बन सकती है, सामाजिक जीवन में आपकी भूमिका की सभी प्रशंसा करेंगे. दैनिक नियमितता का ध्यान रखें.

कुम्भ- आपकी भूमिका की सभी प्रशंसा करेंगे, युवाओं के कैरिअर में बेहतर अवसर मिल सकते हैं, स्थायी प्रयासों में लाभ होगा, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

मीन- तयशुदा कार्यक्रम में बदलाव से खिन्नता बढ़ेगी, वैभव के सामान पर विशेष खर्च की संभावना है. आजीविका प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, कार्यक्षेत्र में विस्तार होगा.

SUDOKU 7468

7							4	
		5		3			7	
					8			2
					1	9		
	2						8	
		6	7					
1			4					
	9			2		5		
	8							1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7467

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7